हनुमान चालीसा

(दोहा)

श्री गुरु चरण सरोज रज, निज मन मुकुर सुधारि ।
बरनौ रघुबर विमल जस, जो दायक फल चारि ॥

बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन कुमार ।
बल, बुद्धि विद्या देहु मोहि, हरहु क्लेश विकार ॥

(चोपाई)

जय हनुमान ज्ञान गुण सागर । जय कपीस तिहुँ लोक उजागर ॥
रामदूत अतुलित बल धामा । अंजनि पुत्र पवन सुत नामा ॥
महावीर विक्रम बजरंगी । कुमति निवार सुमति के संगी ॥
कँचन बरन विराज सुवेशा । कानन कुण्डल कुंचित केशा ॥

हाथ वज्र अरू ध्वजा बिराजै । काँधे मूँज जनेऊ साजै ॥
शँकर सुवन केसरी नन्दन । तेज प्रताप महा जग बन्दन ॥
विद्यावान गुणी अति चातुर । राम काज करिबे को आतुर ॥
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया । राम – लखन– सीता मन बसिया ॥

सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा । विकट रूप धरि लंक जरावा ।
भीम रूप धरि असुर सँहारे । रामचन्द्रजी के काज सँवारे ॥
लाये संजीवन लखन जियाये । श्री रघुबीर हरषि उर लाये ॥
रघुपति कीन्हीं बहुत बड़ाई । तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ॥

सहस वदन तुम्हरो जस गावै । अस कहि श्रीपतिं कण्ठ लगावै ।
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा । नारद शारद सहित अहीसा ॥
यम कुबेर दिकपाल जहाँ ते । कवि कोविद कहि सकै कहाँ ते ॥
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा । राम मिलाय राजपद दीन्हा ॥

तुम्हारो मंत्र विभीषण माना । लंकेश्वर भये सब जग जाना ॥
युग सहस्त्र योजन पर भानू । लीन्हो ताहि मधुर फल जानू ॥
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं । जलधिलाँधिगये अचरज नाहीं ।
दुर्गम काज जगत के जेते । सुगम अनुग्रह तुम्हारे तेते ॥

राम दुआरे तुम रखवारे । होत न आज्ञा बिनु पैसारे ॥
सब सुख लहैं तुम्हारी सरना । तुम रक्षक काहू् को डरना ॥
आपन तेज सम्हारो आपै । तीनहुं लोक हाँक ते काँपै ।
भूत पिशाच निकट नहिं आवै । महावीर जब नाम सुनावै ॥

नासै रोग हरै सब पीरा । जपत निरंतर हनुमत बीरा ।
संकट से हनुमान छुड़ावै । मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ॥
सब पर राम तपस्वी राजा । तिनके काज सकल तुम साजा ॥
और मनोरथ जो कोई लावै । तासु अमित जीवन फल पावै ॥

चारों युग प्रताप तुम्हारा । है प्रसिद्ध जगत उजियारा ॥
साधु–सन्त के तुम रखवारे । असुर निकन्दन राम दुलारे ॥
अष्ट सिद्धि नौ निधिके दाता । अस बर दीन्ह जानकी माता ॥
राम रसायन तुम्हारे पासा । सादर तुम रघुपति के दासा ॥

तुम्हरे भजन राम को पावै । जन्म जन्म के दुख बिसरावै ॥
अन्तकाल रघुपति पुर जाई । जहाँ जन्म हरि भक्त कहाई ॥
और देवता चित न धरई । हनुमत सेई सर्व सुख करई ॥
संकट कटै मिटै सब पीरा । जो सुमिरै हनुमत बल बीरा ॥

जय जय जय हनुमान गोसांई । कृपा करहु गुरुदेव की नाई ।
जो सत बार पाठ कर जोई । छूटहि बन्दि महा सुख होई ॥
जो यह पढ़े हनुमान चालीसा । होय सिद्धि साखी गौरीसा ॥
तुलसीदास सदा हरि चेरा । कीजै नाथ हृदय में डेरा ॥

(दोहा)

पवन तनय संकट हरण, मंगल मूरति रुप ।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप ॥